

आरोह

भाग 2

कक्षा 12 के लिए हिंदी (आधार)
की पाठ्यपुस्तक



12070



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

12070 – आरोह (भाग 2)

कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-659-4

प्रथम संस्करण

जनवरी 2007 माघ 1928

पुनर्मुद्रण

नवंबर 2007, दिसंबर 2008, जनवरी 2010,
नवंबर 2010, जनवरी 2012, दिसंबर 2012,
नवंबर 2013, दिसंबर 2014, दिसंबर 2015,
दिसंबर 2016, नवंबर 2017, दिसंबर 2018,
अक्तूबर 2019, जुलाई 2021 और नवंबर 2021

संशोधित संस्करण

अक्तूबर 2022 कार्तिक 1944

पुनर्मुद्रण

मार्च 2024 चैत्र 1946

दिसंबर 2024 अग्रहायन 1946

PD 190T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
2007, 2022

₹ 90.00

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की विक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड

हेली एक्सटेशन, होस्टेकरे

बनारसकरी III इस्टेज

बैंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस

निकट: धनकल बस स्टॉप पानिहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगांव

गुवाहाटी 781 021

फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम.वी. श्रीनिवासन

मुख्य संपादक : बिज्ञान सुतार

मुख्य उत्पादन अधिकारी : जहान लाल

(प्रभारी)

मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार

संपादक : नरेश यादव

सहायक उत्पादन अधिकारी : दीपक कुमार

आवरण एवं चित्र

अरविंदर चावला

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा चंदू प्रेस, 469, पटपडगंज इंडस्ट्रियल एस्टेट, दिल्ली-110092 द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज्ञादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरीयत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस, और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो. नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्



पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन

कोविड-19 महामारी को देखते हुए, विद्यार्थियों के ऊपर से पाठ्य सामग्री का बोझ कम करना अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री का बोझ कम करने और रचनात्मक नज़रिए से अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्रदान करने पर ज़ोर दिया गया है। इस पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सभी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित करने की शुरुआत की है। इस प्रक्रिया में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पहले से ही विकसित कक्षावार सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखा गया है।

पाठ्य सामग्रियों के पुनर्संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है—

- स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों की पाठ्यपुस्तकों एवं पूरक पाठ्यपुस्तकों में समान विधाओं का समायोजन;
- भाषायी दक्षता के लिए सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति संबंधी विषय वस्तु की उपस्थिति;
- कोविड महामारी से पैदा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम-बोझ और परीक्षा तनाव को कम करना;
- विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से सुलभ पाठ्य सामग्री का होना, जिसे शिक्षकों के अधिक हस्तक्षेप के बिना, वे खुद से या सहपाठियों के साथ पारस्परिक रूप से सीख सकते हों;
- वर्तमान संदर्भ में अप्रासंगिक सामग्री का होना।

वर्तमान संस्करण, ऊपर दिए गए परिवर्तनों को शामिल करते हुए तैयार किया गया पुनर्संयोजित संस्करण है।

भारत का संविधान उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढसंकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख
26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

यह पुस्तक

समय हर पल बदल रहा है, दुनिया हर क्षण नयी हो रही है, साहित्य में हर पल कुछ जुड़ रहा है, भाषा हर क्षण नया-नया रूप ले रही है—तो फिर इन तमाम बदलाव के साथ कदम बढ़ाते बच्चों के हाथ में एक नयी पाठ्यपुस्तक क्यों नहीं?

पिछले दिनों नयी पाठ्यपुस्तकों के आने के बाद शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों और टेली कांफ्रेंसिंग के जरिये अध्यापकों से जुड़ने का मौका मिला। उनकी आँखों में नएपन की चमक थी, जबान पर कुछ सवाल, जो घूम फिरकर लगभग हर कार्यक्रम में उठते रहे। बार-बार नयी किताब क्यों? तरह-तरह की हिंदी क्यों? अलग-अलग जवाबों वाले सवाल क्यों? इत्यादि-इत्यादि।

उपर्युक्त सारे सवाल एक विशेष डोर से बँधे हैं—वह है राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा(2005)। यह सुझाती है कि शिक्षा के उद्देश्य व्यापक होने चाहिए जिनमें—‘विचार और काम की स्वतंत्रता, दूसरों की भलाई और भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता, नयी स्थितियों का लचीलेपन और रचनात्मक तरीके से सामना करना, लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की प्रवृत्ति और आर्थिक प्रक्रियाओं तक सामाजिक बदलाव में योगदान देने के लिए काम करने की क्षमता’ (रा.पा.-2005, सार संक्षेप) प्रमुख हैं। शिक्षा के इन उद्देश्यों को आज के जटिल होते समाज में विशेषकर भाषा साहित्य के विद्यार्थियों को बार-बार जाँचने परखने की जरूरत है। इसी जरूरत को पूरी करने का प्रयास है—‘आरोह भाग-2’ जिसका निर्माण कक्षा-12 में हिंदी (आधार पाठ्यक्रम) पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए किया गया है।

तरह-तरह की हिंदी क्यों? हिंदी एक व्यापक भाषा है और संपर्क भाषा भी है। इसका लेखक और पाठक समुदाय भी बड़ा है। जो कुछ रोज़ रचा जा रहा है उसका दायरा एक ओर कश्मीर से कन्याकुमारी तक है तो दूसरी ओर विभिन्न अनुशासनों के रूप में इसका विस्तार भी है। एक ही शब्द नए प्रसंग में रखे जाने पर अलग अर्थ दे सकता है। यह समाज विज्ञान, पर्यावरण, विज्ञान, कला और साहित्य की भाषा को एक ज़िल्द में पढ़कर बेहतर जाना जा सकता है। भाषा के ये अलग-अलग प्रयोग ही उसे नया करते हैं। वह ठहरी हुई निर्जीव वस्तु नहीं है, बल्कि अपने वैविध्य के साथ विकास करती हुई सजीव धारा है। वैयाकरण किशोरीदास वाजपेयी ने लोक को ही भाषा के बनने का सबसे बड़ा प्रमाण कहा है।

अलग-अलग जवाबों वाले सवाल क्यों? आज का युग सूचना-क्रांति का है। इस युग में धीरे-धीरे मनुष्य सूचनाओं में तब्दील हो रहा है। भाषा और साहित्य की पढ़ाई में भी— ‘हमने समझ के बदले थोड़े वक्त की जानकारी के अंबार को अपना लिया है। इस प्रक्रिया को उलटना होगा। खासकर इस वक्त जब वह सब कुछ जो याद किया जा सकता है, फट पड़ने को तैयार है’ (रा. पा. की रूपरेखा-2005, प्राक्कथन)। भारत अपने मूल स्वभाव में ही बहुभाषी और बहुलतावादी संस्कृतिसंपन्न देश है। ऐसे में यहाँ के युवा होते बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता की पहचान किसी एक पैमाने या तयशुदा उत्तर से संभव नहीं। उन्हें जाँचने-परखने के लिए तो उनकी अभिव्यक्ति विशेष की पहचान कर उसे तराशना ही भाषा

साहित्य के मूल्यांकन का सबसे महत्वपूर्ण अंग होना चाहिए। इसी को ध्यान में रखकर निर्मित प्रश्न अभ्यास विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और उनकी अलग-अलग विशेषता को पहचानने और बढ़ावा देने का माध्यम बन सकते हैं।

उपर्युक्त तमाम बातों को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक को **काव्य खंड** और **गद्य खंड** (दो खंडों) में बाँटा गया है। **काव्य खंड** को पहले रखने का कारण कविता का सबसे पुरानी विधा होने के साथ-साथ विद्यार्थियों का इसके प्रति स्वाभाविक रुझान भी है। कक्षा-10 तक विद्यार्थी ऐतिहासिक क्रम में कवियों से परिचित हो चुका होता है, इसलिए **काव्य खंड** का क्रम निर्धारण सरलता से कठिनाई के सामान्य शैक्षिक नियम को ध्यान में रख कर किया गया है। अन्य भारतीय भाषाओं के कवियों में गुजराती के वरिष्ठ कवि उमाशंकर जोशी और उर्दू के शायर फ़िराक गोरखपुरी को स्थान दिया गया है। हिंदी कविता के साथ भारतीय भाषाओं के इन कवियों को पढ़ना बहुभाषी बहुक्षेत्रीय परिवेश में एक ही रचनात्मक भाव-भूमि की पहचान के रूप में देखा जा सकता है।

गद्य खंड में आर्थिक चिंतन, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, संस्कृति और विज्ञान, पर्यावरण और प्रकृति, लुप्त प्राय प्राचीन कला, फ़िल्मी चरित्र में आम आदमी पर केंद्रित रचनाओं को सम्मिलित किया गया है।

वर्तमान समय में विकास को परिभाषित करता बाज़ार, सशक्त माध्यम के रूप में फ़िल्म और उन सबसे बनता समाज हमारी सोच के केंद्र में है। जहाँ एक ओर बाज़ार ने रोज़गार और व्यापार के अवसर दिए हैं, वहीं दूसरी ओर हमें अपनी गिरफ्त में लेता जा रहा है। नतीजा यह कि दिनोदिन हमारे सोचने-विचारने की दिशा अर्थ-केंद्रित होती जा रही है। जैनेंद्र का *बाज़ार-दर्शन* जैसा पाठ यह अवसर देता है कि हम बाज़ार में रहते हुए बाज़ारवाद से मुक्ति के रास्ते तलाशें।

स्वतंत्रता प्राप्ति और स्वतंत्र भारत की परिकल्पना में जिन लोगों की भूमिका महत्वपूर्ण है उनमें गांधी और आंबेडकर का नाम सबसे पहले आता है। 'जातिभेद का उच्छेद' नामक महत्वपूर्ण भाषण जो काफी विरोधों के बाद भी छपा और बहुत लोकप्रिय हुआ; उसके दो अंश यहाँ लिए गए हैं जो वास्तव में पिछड़े वर्गों को ध्यान में रखते हुए जाति-विमर्श पर विचार के बहाने स्वतंत्रता, समता और बंधुता पर आधारित आदर्श समाज को विचारने का अवसर देते हैं।

पुस्तक की प्रस्तुति 'एक नयी किताब' का सबसे नया और अहम हिस्सा होती है— खासतौर से तब जब पाठ्यचर्या बच्चों के अपने परिवेश और जीते जागते संदर्भों से जोड़कर शिक्षा की बात कर रही है। इस पुस्तक का चयन, प्रश्न-अभ्यास और साज-सज्जा-तीनों ही नए शैक्षिक परिवेश का निर्माण करने में सहायक होंगे।

पुस्तक में ऐसे अभ्यास भी दिए गए हैं जिनके कारण इस बार 'आरोह भाग-1' और 'वितान भाग-1' को पढ़ने की ज़रूरत पड़ सकती है। साथ ही ये अभ्यास पुस्तकालयों में पड़ी बहुत-सी अनछुई किताबों की दुनिया तक ले जाने को विवश करेंगे और नयी पुस्तकों, अखबारों व रोज़ की खबरों के प्रति सचेत कराने में समर्थ होंगे। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा(2005) में इन बातों पर खासा बल है।

अभिव्यक्ति की अपनी भाषा को आमंत्रित करती 'आरोह भाग-2' आपके हाथों में है जिसके संशोधन परिवर्धन के लिए सुझावों का निरंतर स्वागत रहेगा। □□□

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, पूर्व प्रोफेसर, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू. नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनूप कुमार, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

अनामिका, रीडर, सत्यवती कॉलेज, नयी दिल्ली

उषा शर्मा, प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

दिलीप सिंह, प्रोफेसर एवं कुल सचिव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई

नीलकंठ कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

नीरजा रानी, पी.जी.टी., चंद्र आर्य विद्यामंदिर, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नयी दिल्ली

रवीन्द्र कुमार पाठक, पी.जी.टी., राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, भारतनगर, दिल्ली

रवीन्द्र त्रिपाठी, पत्रकार, नयी दिल्ली

रामबक्ष, प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

संजीव कुमार, वरिष्ठ प्रवक्ता, देशबन्धु कॉलेज, नयी दिल्ली

समीर वरण नंदी, प्रवक्ता, बी.एच.ई.एल. स्कूल, हरिद्वार

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली



आभार

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों/परिजनों, प्रकाशकों तथा 'शिरीष के फूल' के फोटोग्राफ़ के लिए शमशेर अहमद खान के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में सहयोग के लिए हम विशेष आमंत्रित शारदा कुमारी, प्रवक्ता, डाइट, आर. के.पुरम, नयी दिल्ली तथा पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए कम्प्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के प्रभारी परशराम कौशिक; कॉपी एडिटर समीना उसमानी, मनोज मोहन सहाय, अवध किशोर सिंह; प्रूफ़ रीडर कविता और डी.टी.पी. ऑपरेटर कमल कुमार के प्रति आभारी हैं।

परिषद् इस संस्करण के पुनर्संयोजन के लिए पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों एवं विषय सामग्री के विश्लेषण हेतु दिए गए महत्वपूर्ण सहयोग के लिए पाठ्यचर्या समूह द्वारा गठित की गई समीक्षा समिति में भाषा शिक्षा विभाग के हिंदी संकाय सदस्यों तथा सी.बी.एस.ई. के प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त करती है।



विषय-क्रम

आमुख	iii
पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन	v
यह पुस्तक	vii

काव्य खंड

1 हरिवंश राय बच्चन 1. आत्मपरिचय 2. एक गीत	3	6 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' बादल राग	32
2 आलोक धन्वा पतंग	9	7 तुलसीदास 1. कवितावली (उत्तर कांड से) 2. लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप	38
3 कुँवर नारायण 1. कविता के बहाने 2. बात सीधी थी पर	15	8 फ़िराक गोरखपुरी रुबाइयाँ	49
4 रघुवीर सहाय कैमरे में बंद अपाहिज	21	9 उमाशंकर जोशी 1. छोटा मेरा खेत 2. बगुलों के पंख	54
5 शमशेर बहादुर सिंह उषा	27		

गद्य खंड

- 10 महादेवी वर्मा 61
भक्तिन
- 11 जैनेन्द्र कुमार 76
बाज़ार दर्शन
- 12 धर्मवीर भारती 89
काले मेघा पानी दे
- 13 फणीश्वर नाथ रेणु 98
पहलवान की ढोलक
- 14 हजारी प्रसाद द्विवेदी 110
शिरीष के फूल
- 15 बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर 120
1. श्रम विभाजन और जाति-प्रथा
2. मेरी कल्पना का आदर्श समाज